विशेषण

विशेषण की परिभाषा

संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं;

जैसे - काला, छोटा, लम्बा, ऊँचा, भारी सुन्दर, एक, दो आदि।

उदाहरण –

नीलिमा एक अच्छी लड़की है। वह रोज़ सुबह जल्दी उठकर बड़ों को नमस्ते करती है। आज वह अपने दोस्तों के साथ बाज़ार गई थी। उसने गुलाबी रंग की फ्रॉक पहनी थी। बाज़ार जाकर उसने एक किलो सेब खरीदा फिर कुछ पीले फूल खरीदे जोकि बहुत सुंदर हैं।

ऊपर दिए गए अनुच्छेद में रेखांकित शब्द जैसे – अच्छी, जल्दी, गुलाबी, एक किलो, पीले फूल, बहुत सुंदर आदि शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं, अत: ये विशेषण हैं।

विशेषण के भेद :- विशेषण के चार भेद माने जाते हैं -

(क) गुणवाचक विशेषण

(ख) संख्यावाचक विशेषण

(ग) परिमाणवाचक विशेषण

(घ) सार्वनामिक विशेषण

गुणवाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द (संज्ञा व सर्वनाम) के गुण दोष, रंग, आकार, अवस्था, स्थिति आदि की विशेषता का ज्ञान (बोध) कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं;

जैसे - बड़ा, काला, लंबा, दयालु, भारी, सुन्दर, कायर, टेढ़ा-मेढ़ा, एक, दो आदि।

उदाहरण -

(i) मैंने आज एक चमकीला पत्थर देखा।

(ii) राकेश लंबा है।

(iii) वाह! यह फूल कितने सुंदर हैं।

(iv) सँभलकर चलो! फर्श चिकना है।

यहाँ चमकीला, लंबा, सुंदर तथा चिकना शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुणों की विशेषता बता रहे हैं; अत: यहाँ गुणवाचक विशेषण है।

गुणवाचक विशेषण की पहचान :-

विशेषण के साथ कैसा या कैसी प्रश्न करने पर जो भी उत्तर मिलता है, वह गुणवाचक विशेषण होता है।

जैसे :-

(i) कैसी कमीज़? (ii) नीली कमीज़।	
(i) कैसा व्यक्ति? (ii) दुष्ट व्यक्ति।	
(i) कैसा आम? (ii) मीठा आम।	

संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण

जिन शब्दों से (संज्ञा या सर्वनाम की) संख्या का बोध (ज्ञान) हो, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे - प्रथम, द्वितीय, तृतीय, एक, दो, तीन, दुगना, चौगुना आदि।

आज रोहन बाज़ार गया था। उसने बाज़ार से एक किलो चीनी, दो केले तथा पाँच चाकलेट खरीदे ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में रंगीन शब्द का ध्यान दीजिए इन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के संख्या का बोध हो रहा है, इसलिए यहाँ संख्यावाचक विशेषण है।

संख्यावाचक विशेषण को दो भागों में बाँटा गया है -

(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण शब्द निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं; जैसे –

(i) आज बाज़ार से मैंने 24 केले लिए।

(ii) मेरे पास कुल दस रुपए हैं।

(2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जिन विशेषण शब्दों से अनिश्चित संख्या का बोध हो, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे -

(i) आज मैंने बहुत सारे केले खाए।

(ii) मेले में आज बहुत लोग आए थे।

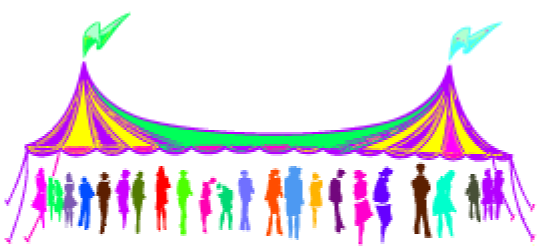

यहाँ **'बहुत सारे'** तथा **'बहुत लोग'** से किसी निश्चित संख्या का पता नहीं चला रहा है; अत: यहाँ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण है।

परिमाणवाचक विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के परिमाण अथवा माप की जानकारी देने वाले शब्दों को 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं; जैसे -

(i) दर्ज़ी ने कमीज़ सिलने के लिए दो मीटर कपड़ा मंगवाया है।

(ii) मैं प्रतिदिन <u>दो लीटर</u> पानी पीता हूँ।

यहाँ पर दो मीटर तथा दो लीटर शब्द से कपड़े तथा पानी के परिमाण का पता चलता है। इसलिए यहाँ परिमाणवाचक विशेषण है। परिमाणवाचक विशेषण को दो भागों में बाँटा गया है -

(1) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(2) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(**1)निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** :- जिन विशेषण शब्दों से परिमाण का ठीक-ठीक या निश्चित रुप से बोध होता है, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे -

(i) इस बोतल में <u>एक लीटर</u> दूध है।

(ii) यहाँ <u>एक लीटर</u> तेल गिर गया है।

यहाँ **एक लीटर** से दूध तथा तेल के निश्चित परिमाण का बोध होता है। इसलिए यहाँ निश्चित परिमाणवाचक विशेषण है।

(2)अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :- जिन विशेषण शब्दों से मात्रा या परिमाण का पता तो चलता है पर निश्चित नाप-तौल का बोध नहीं होता, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं;

जैसे -

(i) कमल! बाज़ार से थोड़ा चावल ले आना।

(ii) आज चाय में बहुत अधिक चीनी पड़ गई है।

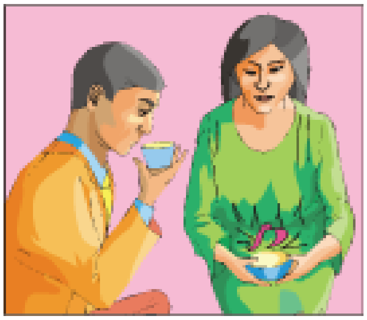

<u>**संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर**</u>**:-** संख्यावाचक विशेषण तथा परिमाणवाचक विशेषण प्राय: एक जैसे लगते हैं। परन्तु इन दोनों में बहुत अंतर होता है; जैसे - यदि विशेष्य को गिना जा सके तो वह संख्यावाचक विशेषण होता है और यदि विशेष्य नापी तौली जाने वाली वस्तु हो तो वहाँ परिमाणवाचक विशेषण होता है।

उदाहरण -

(i) मेरा घर मेरे विद्यालय से **दो किलोमीटर** दूर है। (परिमाणवाचक विशेषण)

(ii) मेरे पास **चार चाकलेट** है। (संख्यावाचक विशेषण)

सार्वनामिक विशेषण

जैसा कि इसके नाम से पता चलता है। जो सर्वनाम शब्द किसी भी संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे -

(i) मुझे <u>कुछ</u> भी खाने को दे दो।

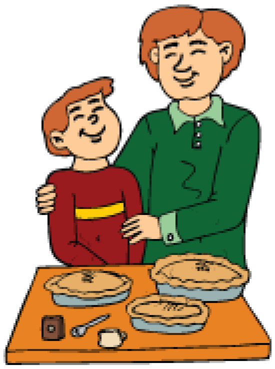

(ii) मुझे तुम्हारी कलम चाहिए।

उपर्युक्त वाक्यों में कुछ तथा तुम्हारी सर्वनाम शब्द हैं जो खाने तथा कलम की विशेषता बता रहे हैं; अत: ये सर्वनामिक विशेषण है।

प्रविशेषण

जो शब्द विशेषण से पहले लगकर उनकी विशेषता बताते हैं; उन्हें प्रविशेषण कहते हैं;

जैसे -

(1) फल बहुत मीठे हैं।

(2) तुम कुछ ज़्यादा ही चतुर हो।

(3) समारोह में लगभग बीस लोग आए थे।

यहाँ मीठे, कुछ ज़्यादा तथा बीस विशेषण है तथा बहुत, कुछ ज़्यादा तथा लगभग शब्द इन विशेषण शब्दों की भी विशेषता बता रहे है, इसलिए ये प्रविशेषण हैं।

विशेषण की अवस्थाएँ-

विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। विशेषता बताने वाली वस्तुओं के गुण-दोष अधिक व कम होते हैं। गुण-दोष के इस अधिक व कम होने को तुलनात्मक तरीके से जाना जा सकता है और इसी तुलनात्मक दृष्टिकोण से विशेषणों की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ होती हैं -

(क) मूलावस्था

(ख) उत्तरावस्था

(ग) उत्तमावस्था

(क) मूलावस्था :- मूलावस्था में केवल सामान्य विशेषता ही प्रकट होती है। इसमें विशेषण का तुलनात्मक रुप नहीं होता है; जैसे -

(1) आशा सीधी लड़की है।

(2) विमलेश अच्छा लड़का है।

(3) चंद्रमा शीतलता देता है।

(ख) उत्तरावस्था :- जब किन्हीं दो व्यक्तियों/वस्तुओं के गुण-दोष की आपस में तुलना की जाती है तब विशेषण उत्तरावस्था में प्रयुक्त होता है; जैसे -

(1) निमेश, राघव से अधिक सचेत है।

(2) राम, लक्ष्मण की अपेक्षा अधिक धैर्यवान हैं।

(3) निशा, अवंतिका से अधिक बुद्धिमान है।

(4) चारू, लता से ज़्यादा अच्छा खाना पकाती है।

(ग) उत्तमावस्था :- उत्तमावस्था के अंतर्गत दो से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना करके किसी एक की सबसे ज़्यादा या सबसे कम आँका (बताया) जाता है; जैसे -

(1) सीता सबसे अधिक गुणी है।

(2) सुलोचना अत्यधिक रुपसी है।

(3) कविश नीच व्यक्ति है।

(4) रुपेश गुणी बालक है।

<u>अवस्थाओं के रुप</u>-

अधिक और सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग करके उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के रुप बनाए जा सकते हैं।

तत्सम शब्दों के मूलावस्था में विशेषण का मूल रुप, उत्तरावस्था में 'तर' और उत्तमावस्था में 'तम' का प्रयोग होता है; जैसे -

	मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
1	दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
2	उच्च	उच्चतर	उच्चतम
3	गुरु	गुरुतर	गुरुतम
4	अधिक	अधिकतर	अधिकतम
5	तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
6	मधुर	मधुरतर	मधुरतम
7	दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
8	विशाल	विशालतर	विशालतम

9	प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
10	उत्कृष्ट	उत्कृष्टतर	उत्कृष्टतम
11	निकट	निकटतर	निकटतम
12	सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
13	श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
14	महान	महानतर	महानतम
15	लघु	लघुतर	लघुतम
16	निम्न	निम्नतर	निम्नतम

विशेषणों की रचना-

रचना की दृष्टि से विशेषण तीन प्रकार के होते हैं -

(क) मूल विशेषण :- कुछ शब्द मूल रुप से ही विशेषण होते हैं; जैसे - सुंदर, ऊँचा, काला आदि।

(ख) उपसर्ग, प्रत्यय जोड़कर :-

उपसर्ग लगाकर :- अटल, निराकार

प्रत्यय लगाकर :- इमरती, व्यावहारिक

(ग) समास का प्रयोग कर :- दो से या दो शब्दों को मिलाकर विशेषण बनाए जाते हैं;

जैसे -

(1) खाता-पीता

(2) हँसता-रोता

1.<u>संज्ञा शब्दों से विशेषण निर्माण</u>-

<u>संज्ञा</u>	**<u>विशेषण</u>**
उदास	उदासी
कल्पना	काल्पनिक
मास	मासिक
अंक	अंकित
प्रांत	प्रांतीय
मद	मादक
घर	घरेलू

पाप	पापी
धर्म	धार्मिक
गर्व	गर्वीला
मन	मानसिक
गाँव	गँवार
रंग	रंगीला
कलंक	कलंकित
बुराई	बुरा
चंचलता	चंचल
अर्थ	आर्थिक
स्थान	स्थानीय

रेत	रेतीला
साहस	साहसी
बल	बलवान
ज्ञान	ज्ञानी
काँटा	कँटीला
विष	विषैला
शर्म	शर्मीला
धन	धनवान
लोक	लौकिक
वेद	वैदिक
शहर	शहरी

भारत	भारतीय
पर्वत	पर्वतीय
समाज	सामाजिक

2.<u>सर्वनाम शब्दों से विशेषण निर्माण</u>-

यह	ऐसा
तुम	तुमसा
वह	वैसा
जो	जैसा

3.<u>क्रिया शब्दों से विशेषण बनाना</u>-

क्रिया	**विशेषण**
टिकना	टिकाऊ
घूमना	घुमक्कड़
मरना	मरियल
हँसना	हँसोड़
भगना	भगोड़ा
बनाना	बनावटी
पढ़ाना	पढ़ाकू

4.<u>अव्यय शब्दों से विशेषणों की रचना</u>-

अव्यय	**विशेषण**
ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी
नीचे	निचला
भीतर	भीतरी
पीछे	पिछला